अपठित गद्यांश-बोध

निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. 'अनुशासन' का अर्थ है–अपने को कुछ नियमों से बाँध लेना और उन्हीं के अनुसार कार्य करना। कुछ व्यक्ति अनुशासन की व्याख्या 'शासन का अनुगमन' करने के अर्थ में करते हैं, परंतु यह अनुशासन का संकुचित अर्थ है। व्यापक रूप में अनुशासन सुव्यवस्थित ढंग से उन आधारभूत नियमों का पालन ही है, जिनके द्वारा किसी अन्य व्यक्ति के मार्ग में बाधक बने बिना व्यक्ति अपना पूर्ण विकास कर सके।

अनुशासन में रहने का भी एक आनंद है, लेकिन आज व्यक्तियों में अनुशासनहीनता की भावना बढ़ रही है। समाचार-पत्रों में हमेशा यही पढ़ने को मिलता है कि आज अमुक नगर में दस दुकानें लूटी गईं, बसों में आग लगा दी गई, दो गिरोहों में लाठियाँ चल गईं आदि। ये बातें आए दिन पढ़ने को मिलती हैं। यदि किसी भी कर्मचारी को कोई गलत काम करने से रोका जाए, तो वह अपने साथियों से मिलकर काम बंद करा देगा। बहुत दिनों तक हड़तालें चलती रहेंगी। कारखानों और कार्यालयों में काम बंद हो जाएगा।

अनुशासन के अभाव में समाज में अराजकता और अशांति का साम्राज्य होता है। वन्य पशुओं में अनुशासन का कोई महत्त्व नहीं है, इसी कारण उनका जीवन अरक्षित, आतंकित एवं अव्यवस्थित रहता है। सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ-साथ जीवन में अनुशासन का महत्त्व भी बढ़ता गया। आज के वैज्ञानिक युग में तो अनुशासन के बिना मनुष्य का कार्य ही नहीं हो सकता। कुछ व्यक्ति सोचते हैं कि अब मानव सभ्य और शिक्षित हो गया है, उस पर किसी भी प्रकार के नियमों का बंधन नहीं होना चाहिए। वह स्वतंत्र रूप से जो भी करे, उसे करने देना चाहिए। लेकिन यदि व्यक्ति को यह अधिकार दिया जाए तो चारों तरफ वन्य जीवन जैसी अव्यवस्था आ जाएगी। मानव, मानव ही है, देवता नहीं। उसमें सुप्रवृत्तियाँ और कुप्रवृत्तियाँ दोनों ही होती हैं। मानव सभ्य तभी तक रहता है, जब तक वह अपनी सुप्रवृत्तियों की आज्ञा के अनुसार कार्य करे। इसलिए मानव के पूर्ण विकास के लिए कुछ बंधनों और नियमों का होना आवश्यक है। अनुशासनबद्धता मानव-जीवन के मार्ग में बाधक नहीं, अपितु उसको पूर्ण उन्नति तक पहुँचाने के लिए अनुकूल अवसर प्रदान करती है। अनुशासन के बिना तो मानव-जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

विद्यार्थी जीवन में तो अनुशासन का बहुत महत्त्व है। आज अनुशासनहीनता के कारण साल में छह महीने विश्वविद्यालयों में हड़तालें हो जाती हैं। तोड़-फोड़ करना तो विद्यार्थी का कर्तव्य बन गया है। छोटी-छोटी बातों में मारपीट हो जाती है। अतः हर मनुष्य का कर्तव्य है कि अनुशासन का उल्लंघन न करे। यह विचित्र होते हुए भी कितना सत्य है कि अनुशासन एक प्रकार का बंधन है, परंतु मनुष्य को स्वच्छंद रूप से अपने अधिकारों का पूरा सदुपयोग करने का अवसर भी प्रदान करता है। वह एक ओर बंधन है, तो दूसरी ओर मुक्ति भी।

प्रश्न (क) मानव-विकास के लिए अनुशासन क्यों आवश्यक है?

(ख) वन्य जीव असुरक्षित क्यों होते हैं? इसका क्या परिणाम होता है?

(ग) विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन का महत्त्व क्यों है?

(घ) "अनुशासनहीनता देश की प्रगति में बाधक सिद्ध होती है।" स्पष्ट कीजिए।

(ङ) "अनुशासन एक ओर बंधन है, तो दूसरी ओर मुक्ति।" स्पष्ट कीजिए।

(च) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

(छ) निर्देशानुसार उत्तर दीजिए–

(i) "अनुशासन के अभाव में समाज में अराजकता और अशांति का साम्राज्य होता है।" मिश्र वाक्य में बदलिए।

(ii) विलोम शब्द लिखिए–बंधन, शिक्षित।

(ii) 'विचार' और 'हृदय' शब्दों में 'इक' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए।

9. संसार में दो अचूक शक्तियाँ हैं–वाणी और कर्म। कुछ लोग वचन से संसार को राह दिखाते हैं और कुछ लोग कर्म से। शब्द और आचार दोनों ही महान शक्तियाँ हैं। शब्द की महिमा अपार है। विश्व में साहित्य, कला, विज्ञान, शास्त्र सब शब्द-शक्ति के प्रतीक प्रमाण हैं। पर कोरे शब्द व्यर्थ होते हैं, जिनका आचरण न हो। कर्म के बिना वचन की, व्यवहार के बिना सिद्धांत की कोई सार्थकता नहीं है।

निस्संदेह शब्द-शक्ति महान है, पर चिरस्थायी और सनातनी शक्ति तो व्यवहार है। महात्मा गांधी ने इन दोनों की कठिन और अद्भुत साधना की थी। महात्मा जी का संपूर्ण जीवन इन्हीं दोनों से युक्त था। वे वाणी और व्यवहार में एक थे। जो कहते थे, वही करते थे। यही उनकी महानता का रहस्य है। कस्तूरबा ने शब्द की अपेक्षा कृति की उपासना की थी, क्योंकि कृति का उत्तम व चिरस्थायी प्रभाव होता है। 'बा' ने कोरी शाब्दिक, शास्त्रीय, सैद्धांतिक शब्दावली नहीं सीखी थी। वे तो कर्म की उपासिका थीं। उनका विश्वास शब्दों की अपेक्षा कर्मों में था। वे जो कहा करती थीं, उसे पूरा करती थीं। वे रचनात्मक कर्मों को प्रधानता देती थीं। इसी के बल पर उन्होंने अपने जीवन में सार्थकता और सफलता प्राप्त की थी।

प्रश्न **(क)** उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) सज्जन व्यक्ति संसार के लिए क्या-क्या करते हैं? और कैसे?

(ग) गांधी जी महान क्यों थे?

(घ) संसार की कौन-सी अचूक शक्तियाँ हैं? इनमें एक के बिना दूसरी अधूरी क्यों है?

(ङ) कस्तूरबा ने किसकी उपासना की और क्यों?

(च) "कर्म के बिना वचन की, व्यवहार के बिना सिद्धांत की कोई सार्थकता नहीं है"–स्पष्ट कीजिए।

अपठित काव्यांश-बोध

उदाहरण

निम्नलिखित काव्यांशों तथा इन पर आधारित प्रश्नोत्तरों को ध्यानपूर्वक पढ़िए–

1. अपने नहीं अभाव मिटा पाया जीवन भर
पर औरों के सभी अभाव मिटा सकता हूँ।
तूफ़ानों-भूचालों की भयप्रद छाया में,
मैं ही एक अकेला हूँ जो गा सकता हूँ।
मेरे 'मैं' की संज्ञा भी इतनी व्यापक है,
इसमें मुझ-से अगणित प्राणी आ जाते हैं।
मुझको अपने पर अदम्य विश्वास रहा है।
मैं खंडहर को फिर से महल बना सकता हूँ।
जब-जब भी मैंने खंडहर आबाद किए हैं,
प्रलय-मेघ भूचाल देख मुझको शरमाए।
मैं मज़दूर मुझे देवों की बस्ती से क्या
अगणित बार धरा पर मैंने स्वर्ग बनाए।

प्रश्न **(क)** स्वर्ग के प्रति मज़दूर की विरक्ति का क्या कारण है ?

(ख) किन कठिन परिस्थितियों में उसने अपनी निर्भयता प्रकट की है ?

(ग) मेरे 'मैं' की संज्ञा भी इतनी व्यापक है,
इसमें मुझ-से अगणित प्राणी आ जाते हैं।
उपर्युक्त पंक्तियों का भाव स्पष्ट करके लिखिए।

(घ) अपनी शक्ति और क्षमता के प्रति उसने क्या कहकर अपना आत्म-विश्वास प्रकट किया है ?

उत्तर (क) मज़दूर निर्माता है। वह अपनी शक्ति से धरती पर स्वर्ग के समान सुंदर बस्तियाँ बना सकता है। इस कारण उसे स्वर्ग से विरक्ति है।

(ख) मज़दूर ने तूफ़ानों व भूकंपों जैसी मुश्किल परिस्थितियों में भी घबराहट प्रकट नहीं की है। वह हर मुसीबत का सामना करने को तैयार रहता है।

(ग) इसका अर्थ यह है कि 'मैं' सर्वनाम शब्द श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहा है। कवि कहना चाहता है कि मज़दूर वर्ग में संसार के सभी क्रियाशील प्राणी आ जाते हैं।

6\. जिसमें स्वदेश का मान भरा
आज़ादी का अभिमान भरा
जो निर्भय पथ पर बढ़ आए
जो महाप्रलय में मुस्काए
जो अंतिम दम तक रहे डटे
दे दिए प्राण, पर नहीं हटे
जो देश-राष्ट्र की वेदी पर
देकर मस्तक हो गए अमर
ये रक्त-तिलक-भारत-ललाट!
उनको मेरा पहला प्रणाम!
फिर वे जो आँधी बन भीषण
कर रहे आज दुश्मन से रण
बाणों के पवि-संधान बने
जो ज्वालामुख-हिमवान बने
हैं टूट रहे रिपु के गढ़ पर
बाधाओं के पर्वत चढ़कर
जो न्याय-नीति को अर्पित हैं
भारत के लिए समर्पित हैं
कीर्तित जिससे यह धरा धाम
उन वीरों को मेरा प्रणाम
श्रद्धानत कवि का नमस्कार
दुर्लभ है छंद-प्रसून हार
इसको बस वे ही पाते हैं
जो चढ़े काल पर आते हैं
हुंकृति से विश्व कँपाते हैं
पर्वत का दिल दहलाते हैं
रण में त्रिपुरांतक बने शर्व
कर ले जो रिपु का गर्व खर्च
जो अग्नि-पुत्र, त्यागी, अकाम
उनको अर्पित मेरा प्रणाम!

प्रश्न (क) कवि किन वीरों को प्रणाम करता है?

(ख) कवि ने भारत के माथे का लाल चंदन किन्हें कहा है?

(ग) दुश्मनों पर भारतीय सैनिक किस तरह वार करते हैं?

(घ) कवि की श्रद्धा किन वीरों के प्रति है?

उत्तर (क) कवि उन वीरों को प्रणाम करता है, जिनमें स्वदेश का मान भरा है तथा जो साहस और निडरता से अंतिम दम तक देश के लिए संघर्ष करते हैं।

(ख) कवि ने भारत के माथे का लाल चंदन (तिलक) उन वीरों को कहा है, जिन्होंने देश की वेदी पर अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

(ग) दुश्मनों पर भारतीय सैनिक आँधी की तरह भीषण वार करते हैं तथा आग उगलते हुए उनके किलों को तोड़ देते हैं।

(घ) कवि की श्रद्धा उन वीरों के प्रति है, जो मृत्यु से नहीं घबराते, अपनी हुंकार से विश्व को कँपा देते हैं तथा जिनके साहस और वीरता की कीर्ति धरती पर फैली हुई है।

खंड–ख

कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन

2. आज का विद्यार्थी

विद्यार्थी किसी भी समाज और राष्ट्र की अनमोल धरोहर होते हैं। वे ही कल के भावी नागरिक और राष्ट्र-निर्माता हैं। उनकी योग्यता के दम पर ही राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। उनके बारे में हर युग में चर्चा होती रही है। आज समाज का हर वर्ग विद्यार्थियों से बहुत अधिक अपेक्षाएँ करने लगा है। वह माता-पिता, समाज, देश आदि की अपेक्षाओं के चक्रव्यूह में स्वयं को घिरा पाता है। अभिमन्यु की भाँति अकेला होने पर भी उसे हर एक की अपेक्षाओं पर खरा उतरना है। आज के विद्यार्थी को अच्छा विद्यार्थी बनने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। सरकारी स्कूलों में उसका दाख़िला सरलता से हो जाता है, परंतु वहाँ बुनियादी सुविधाओं की घोर कमी होती है। प्राइवेट स्कूल बुनियादी सुविधाओं के साथ-साथ अन्य सुविधाओं से युक्त होते हैं, परंतु उनकी भारी-भरकम फीस और दाखिलें की ऊँची पहुँच आम अभिभावक से दूर ही बनी रहती है। यदि येन-केन प्रकारेण दाखिला मिल भी जाए तो अच्छे अंक लाने की चुनौती बनी रहती है। इसके लिए योग्य अध्यापकों के अलावा अच्छी पुस्तकों की आवश्यकता होती है। यदि इनकी पूर्ति हो भी जाती है तो एक अच्छे ट्यूशन की भी ज़रूरत होती है। इतना सब करने के साथ-साथ उसे अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान बनाए रखना होता है, क्योंकि स्वस्थ शरीर के बिना अच्छी पढ़ाई की बात करना बेमानी ही साबित होगी। नित नए फ़ैशन का आकर्षण, टेलीविजन के कार्यक्रम, राजनीतिज्ञों का प्रलोभन विद्यार्थियों को अपने-अपने तरीके से आकर्षित करते हैं। चैनलों की भरमार उनके मन को पढ़ाई से दूर करके अपनी ओर खींचती है। साथ-साथ जब वे उच्च शिक्षा प्राप्त बेरोजगारों की लंबी-लंबी कतारें देखते हैं तो उनका उत्साह और कम हो जाता है। लगातार प्रयास के बाद भी नौकरी न पानेवाला युवक अध्यापक, माता-पिता और समाज की दृष्टि में सम्मान का अधिकारी नहीं बन पाता है। यह सब देखकर आज का विद्यार्थी सतर्क हो गया है। वह अपनी स्थिति और वास्तविक शक्ति से परिचित हो चुका है। वह नई-नई तकनीकों की जानकारी के सहारे अर्जुन की भाँति अपने लक्ष्य-भेदन के लिए तैयार दिखाई देता है। इसके लिए ज़रूरी है कि वह बुराइयों और मादक पदार्थों के सेवन से दूरी बनाए रखे।

4. फ़िल्मों की सामाजिक भूमिका

वर्तमान समय में फ़िल्में ज्ञान एवं मनोरंजन का साधन बन गई हैं। हमारे देश में इनका प्रचलन 20वीं सदी के प्रारंभ में हुआ। सन् 1913 में हिंदी में पहली मूक फ़िल्म 'राजा हरिश्चंद्र' प्रदर्शित हुई। इसके बाद फिल्म निर्माण का काम फलता-फूलता गया। आज विश्व की सर्वाधिक फ़िल्में हमारे देश में बनाई जाती हैं। फ़िल्मों से हमारे समाज का एक बड़ा वर्ग प्रभावित होता है। इसके मायाजाल में अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित, शासक-मजदूर सभी भ्रमित से दिखाई पड़ते हैं। फ़िल्में सामाजिक बुराइयों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करती हैं और उन्हें दूर करके समाज में स्वस्थ वातावरण का निर्माण करती हैं। फ़िल्मों से लोग, विशेषतः युवा हिंसा, चोरी, मारपीट, लूटपाट, डकैती आदि के दुष्परिणामों से अवगत होते हैं, जिससे वे इनसे दूर रहने का प्रयास करते हैं। 'प्यासा' और 'प्रभात' जैसी फ़िल्में देखकर अनेक नारियों ने वेश्यावृत्ति से मुँह मोड़कर नए ढंग से जीवन जीना शुरू कर दिया है। फ़िल्में इतिहास की घटनाओं को दर्शाने के साथ ही व्यक्ति के मन में छिपे उल्लास और दुख को भी व्यक्त करती हैं। 'बॉर्डर' फ़िल्म में भारत-पाक युद्ध तथा 'हक़ीक़त' फ़िल्म में चीन के साथ हुए युद्ध को चित्रित किया गया है तो 'गोदान' फ़िल्म में 1930 के समय में पूँजीपतियों और अंग्रेज़ों के द्वारा किसानों तथा आम भारतीय जनता के शोषण को बखूबी दर्शाया गया है। फ़िल्मों के गीत हमारे जीवन के दुख-सुख के साथी बन जाते हैं। इनसे व्यक्ति अपनी निराशा, एकाकीपन तथा दुख आदि दूर करने के प्रयास करता है। आज भी राष्ट्रीय पर्वों पर 'ऐ मेरे वतन के लोगो' गीत देशवासियों में देशप्रेम और राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत कर देता है तो 'बाबुल की दुआएँ लेती जा' गीत सुनकर वधू पक्ष ही नहीं वर पक्ष के लोगों की आँखें भी नम हो जाती हैं। हालाँकि फ़िल्मों ने फ़ैशन और आधुनिक जीवन शैली के नाम पर समाज में फूहड़पन को भी बढ़ाया है। फ़िल्म निर्माताओं को अपने दायित्व का ध्यान रखते हुए ऐसी फ़िल्में बनानी चाहिए, जो हमारे समाज को एक नई दिशा प्रदान कर सके।

5. आधुनिक युग में कंप्यूटर

कंप्यूटर आधुनिक विज्ञान की अद्भुत देन है। इसकी उपयोगिता, लोकप्रियता और आवश्यकता निरंतर बढ़ती जा रही है। इसकी पहुँच जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हो गई है। यह कंप्यूटर के प्रभाव का असर है कि हर व्यक्ति इसे सीखना चाहता है। इसी बात का फायदा उठाने के लिए छोटे-बड़े हर स्थान पर कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र खुलते जा रहे हैं। वास्तव में, कंप्यूटर ऐसा संयंत्र है, जिसमें यांत्रिक मस्तिष्कों का रूपात्मक और समन्वयात्मक योग है और जो अत्यंत तीव्र गति से कम-से-कम समय में अधिकाधिक कार्य कर सकता है। इसकी उपयोगिता का प्रमाण यह है कि रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन, स्कूल, डाकघर, हवाई अड्डे, पुस्तक प्रकाशन केंद्रों, समाचार-पत्रों के कार्यालय तथा अस्पतालों जैसे विभिन्न सरकारी एवं निजी कार्यालयों में इसका प्रयोग किया जा रहा है। संचार का क्षेत्र ऐसा है जहाँ कंप्यूटर का एकछत्र राज्य है। टेलीफ़ोन, मोबाइल फ़ोन जैसी संचार सेवाएँ कंप्यूटर की सहायता के बिना संभव ही नहीं हैं। इंटरनेट और कंप्यूटर एक-दूसरे के पूरक बन चुके हैं। अंतरिक्ष से लिए गए चित्रों का विश्लेषण हो या मौसम संबंधी भविष्यवाणी या ज्योतिष विद्या सबके लिए कंप्यूटर का प्रयोग अत्यावश्यक बन गया है। कार्यालयों में फाइलों को सुरक्षित रखना, उन्हें नष्ट होने से बचाए रखने की बातें कंप्यूटर के कारण ही अब गुजरे ज़माने की बातें हो चुकी हैं। कई-कई आलमारियों की फाइलें एक छोटे-से यंत्र कंप्यूटर में सरलता से संरक्षित रखी जा रही हैं। इसमें से न सूचनाएँ नष्ट की जा सकती हैं और न कोई पेज फाड़ा जा सकता है। चिकित्सा के क्षेत्र में कंप्यूटर किसी वरदान से कम नहीं है। विभिन्न टेस्टों का परीक्षण कर उनसे जुड़ी वांछित जानकारी से रोगों का निदान अब सरलता से किया जाने लगा है। शल्य-चिकित्सा हो अन्य कोई चिकित्सा, कंप्यूटर के कारण आसान होती जा रही है। कंप्यूटर हमारे जीवन के लिए अत्यावश्यक है, पर यह मशीनी उपकरण है, जिसका सदुपयोग करना या दुरुपयोग करना मनुष्य के अपने हाथ में है। मनुष्य को चाहिए कि विज्ञान के इस अद्भुत वरदान का प्रयोग बहुत ही सोच-समझकर करे।

45. विज्ञान वरदान या अभिशाप

वर्तमान समय को विज्ञान का युग कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। आज जीवन के हर क्षेत्र में घर या बाहर, धर्म हो अथवा राजनीति कहीं भी विज्ञान का प्रभुत्व देखा जा सकता है। विज्ञान ने हमारे जीवन की दशा और दिशा दोनों ही बदल दी है। इससे जीवन सरल तथा सुखमय बन गया है। विज्ञान के कारण मनुष्य को ऐसी शक्ति मिल गई है कि वह प्रकृति से भी मनचाहा काम करा रहा है। विज्ञान के दो रूप हमारे सामने हैं–वरदान और अभिशाप। जब मनुष्य विज्ञान का प्रयोग अपनी तथा दूसरों की भलाई के लिए करता है तो यह वरदान है और जब वह आसुरी शक्तियों से प्रेरित होकर विज्ञान का दुरुपयोग करते हुए दूसरों का अहित करता है तब विज्ञान को अभिशाप बनते देर नहीं लगती है। यूँ तो मनुष्य ने समय-समय पर तरह-तरह के आविष्कार किए हैं, परंतु उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी में विज्ञान की मदद से मनुष्य ने ऐसे आविष्कार किए, जिनकी वजह से संसार का रूप ही नहीं बल्कि मान्यताएँ भी बदली नज़र आती हैं। विज्ञान के कारण ही मनुष्य की कल्पनाएँ साकार रूप लेने लगी हैं। चंद्रमा और मंगल ग्रह पर यान भेजने जैसे अकल्पनीय कार्य विज्ञान की सहायता से ही संभव हो सके हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाने का श्रय विज्ञान को ही जाता है। महामारियों पर विजय पाना हो या एक्स-रे और अल्ट्रासाउंड मशीनों द्वारा शरीर के आतंरिक अंगों की जाँच कर उन्हें बदलने और मनुष्य को नया जीवन देने का कार्य हो, सभी को विज्ञान ने मानवता के कल्याण हेतु सफ़लतापूर्वक संपन्न किया है। आज श्रम से थके मानव का मनोरंजन करने के लिए रेडियो, टेलीविज़न, सिनेमा तथा ओडियो-विडियों के अनेकानेक साधन उपलब्ध हैं। विज्ञान ने मानव जीवन को सुखमय बनाया है। पंखे, कूलर, हीटर, एअर कंडीशनर, प्रेस, ठंडा-गरम पानी की मशीनें, वाशिंग मशीन, फ्रिज और न जाने क्या-क्या सब विज्ञान की देन हैं। दुर्भाग्य से विज्ञान की यही शक्ति आतंकियों के हाथ पड़ जाती है तो वह समूची मानवता के लिए खतरा साबित होती है। निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि विज्ञान को वरदान या अभिशाप बनाना मनुष्य के विवेक पर निर्भर है।

कार्यालयी पत्र

1. आपके मुहल्ले में सफाई कर्मचारी नहीं आते हैं। इसके लिए अधिसूचित क्षेत्र के स्वास्थ्य अधिकारी को एक-एक पत्र लिखिए।

उत्तर-

पत्रांक................ दिनांक 31/12/2019

31/12/2019

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी,

अधिसूचित क्षेत्र कार्यालय,
जमशेदपुर, पूर्वी सिंहभूम।

विषय : मुहल्ले की सफाई के लिए प्रार्थना-पत्र

महोदय,

निवेदन है कि गत तीन दिनों से हमारे मुहल्ले का सफ़ाई कर्मचारी काम पर नहीं आ रहे हैं। इससे मुहल्ले की सड़क पर बेहद कूड़ा इकट्ठा हो गया है। नालियों के मुँह पर कूड़ा फँस जाने के कारण पानी का बहाव रूक गया है। परिणामस्वरूप सड़क पर भी पानी बहने लगा है। बेहद गंदगी के कारण घर से बाहर निकलने में असुविधा तो हो ही रही है, बदबू भी फैल रही है, जिससे साँस ले पाना भी दूभर हो गया है। यदि यही अवस्था कुछ दिनों तक और बनी रही तो कोई भयंकर महामारी फैल सकती है, जिसके परिणाम भयंकर और जानलेवा हो सकते हैं। ऐसा होने से पूर्व आप अपने सफाई कर्मचारियों को भेजकर तुरंत सफाई करवाने की व्यवस्था कर दें तो अच्छा रहेगा।

आशा है आप स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए निवेदन को पूरा करने में विलम्ब नहीं होने देंगे।

भवदीय,
राजेश,
सचिव, मुहल्ला सुधार समिति,
कालिका नगर, डिमना रोड
मानगो, पूर्वी सिंहभूम

दिनांक

2. प्रश्न : सम्पादक के नाम पत्र लिखते हुए वर्त्तमान विधि-व्यवस्था और प्रशासनिक निष्क्रियता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर -

पत्रांक.................   दिनांक...............

सेवा में,

सम्पादक महोदय,

दैनिक हिन्दुस्तान,

साकची, जमशेदपुर।

महाशय,

मैं आपके लोकप्रिय पत्र के माध्यम से वर्त्तमान शैक्षिक व्यवस्था में व्याप्त अनियमितता से संबंधित एक पत्र प्रेषित करना चाहता हूं जिससे संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट हो सके।

जैसा कि हम जानते हैं शिक्षा सामाजिक और राष्ट्रीय विकास की रीढ़ है। लेकिन आज वही रीढ़ कमजोर होकर टूटती जा रही है। आये दिन शिक्षण-संस्थानों में हड़ताल और तालाबंदी की घटनाएं घटती रहती हैं। शिक्षकों का समय पर वेतन तक नहीं मिलता है। भला, भूखों रहकर कोई कब तक पढ़ाये ? परीक्षा और उसके परिणाम की हालत तो और भी चिंतनीय है। समय पर परीक्षाएँ नहीं हो पाती हैं। अगर किसी तरह परीक्षा हो भी गई तो उसका परिणाम कब निकलेगा, यह भगवान भरोसे है।

शिक्षण-संस्थानों में मानवीय मूल्यों की गिरावट तो और चिंतनीय है। विद्यार्थी और शिक्षकों के बीच का वह मधुर सम्बन्ध टूट - सा गया है।

आशा है, आप इसे अपने पत्र में स्थान देंगे। धन्यवाद।

भवदीय

आलोक

साकची, जमशेदपुर